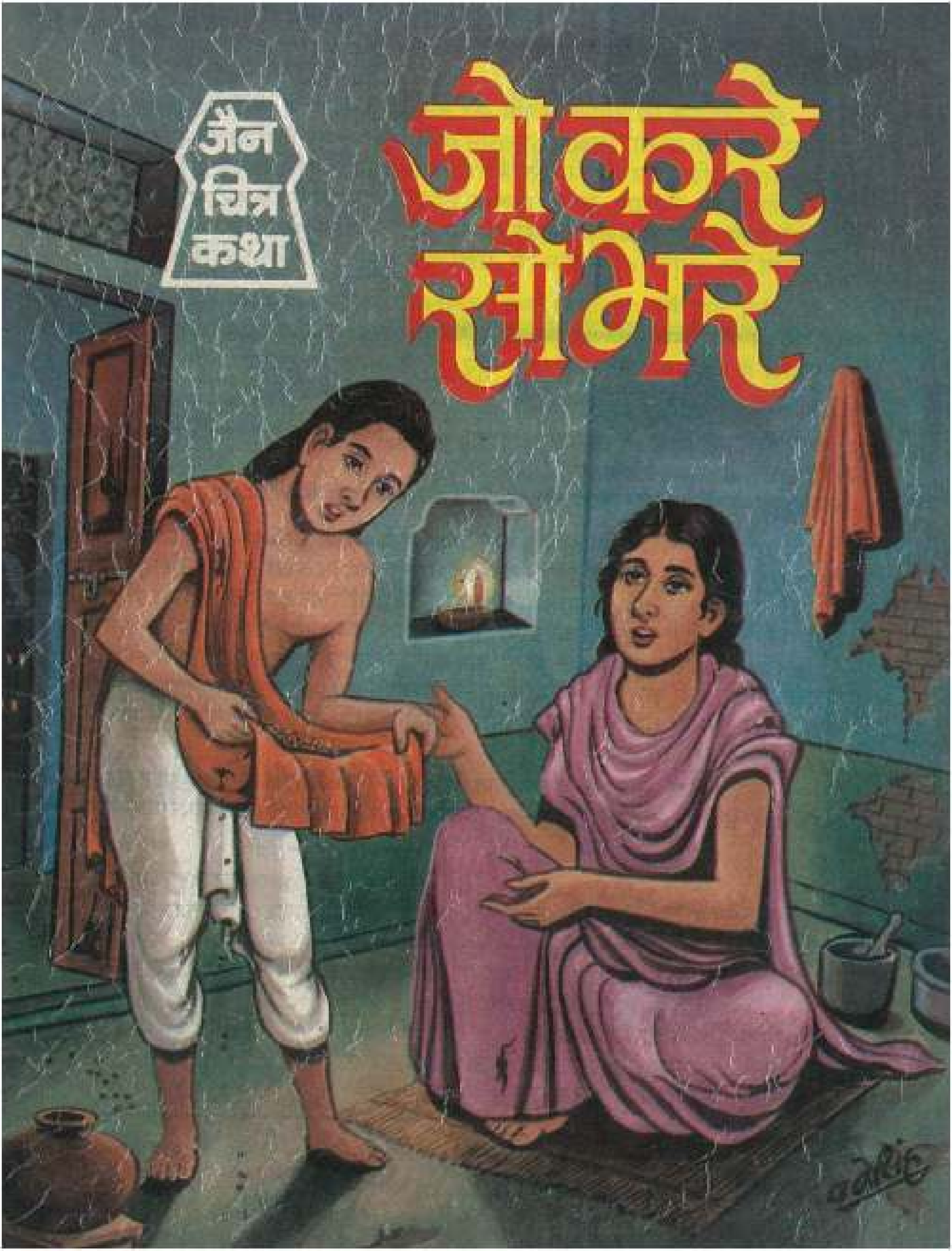
जैन चित्र कथा
जो करे सो भरे

सम्पादकीय –

जैन चित्र कथा आपके बच्चे को जैन संस्कृति से परिचित कराती है। इस पुस्तक की कथा आचार्य सकल कीर्ति जी द्वारा लिखित संस्कृतकाव्य धन्यकुमार चरित्र पर आधारित है। नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके समक्ष रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की ओर प्रेरित हो और जीवन का सही रास्ता उन्हें मिल सके। कहानी को पढ़ने से ज्ञात होगा कि व्यक्ति लोभ बस या अज्ञानता बस अनर्थ कर जाता है।

बेटा जरा मेरे हाथ धुला देना ! क्या बात है पिता जी, आपने केवल इस थैली में से पांच रूपये ही तो निकाले हैं फिर हाथ क्यों धोते हैं ! बेटा ये धर्मादा के रूपये हैं। इसका अंश भी यदि घर में रह गया या अपने काम में ले आये तो न जाने क्या का क्या हो जाये।

फिर भगवान के समक्ष चढ़ाया हुआ द्रव्य या दान दिया हुआ द्रव्य यदि कोई खाता है, प्रयोग करता है, उसे कितना पाप बंध होता है, क्या-क्या फल भोगना पड़ता है, सर्वज्ञ देव ही जानते हैं या जानते हैं वे लोग जिन्हें भोगना पड़ा है।

जो करे सो भरे यह कृति आपके हाथ में है आइये देखिये देव द्रव्य खाने का फल धनकुमार के जीव ने किस प्रकार भोगा क्या-क्या दुर्गति हुई उसकी, जीवन में पैसे-पैसे को तरसा। कैसी बीती उसकी जिन्दगी, बस वैसी ही जैसी गरीब की बीतती है। और जब उसने अपने जीवन को मोड़ दिया, धर्म की ओर लक्ष्य दिया, जीवन ही बदल गया उसका। मिट्टी में भी हाथ डाला तो सोना निकला। यदि इस पुस्तक के पढ़ने से किसी एक को भी निश्चय हो गया कि यदि मैं बुरा करूँगा तो बुरा होगा ओर उसने बुराई से हाथ खींच लिया तो मेरा यह प्रयास सफल समझूँगा।

धार्मिक आचरण राष्ट्रीय चरित्र को उन्नति देने वाला है। तथा हमें आचरण उसके अनुरूप बनाना होगा। तभी हमारा जीवन सफल होगा।

धर्म चन्द शास्त्री
(परम पूज्य दिगम्बर जैनाचार्य
श्री धर्म सागर जी संघस्थ)

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला, "गोधा सदन" अलसीसर हाऊस, संसार चन्द्र रोड़ जयपुर - 302001

सम्पादक : धर्म चन्द शास्त्री

लेखक : डा. मूल चन्द जैन, मुजफ्फर नगर

चित्रकार : बने सिंह, जयपुर

प्रकाशन वर्ष : १९८७ अंक : ५ मूल्य : 10.00 रु.

कामवती नगर में भगवान शांतिनाथ के चैत्यालय में श्री दत्त नाम का एक मठपति था, जो इतना लोभी था कि भगवान के समक्ष चढ़ाया हुआ द्रव्य भी वह खा जाता था। देवद्रव्य को खाने के पाप से अगले भव में
जो करे सो भरे
रेखांकन

गर्भ में ही था कि पिता सेठ भोगदत्त की मृत्यु हो गई और माता सेठानी भोगवती
हाय रे विधाता! मेरे गर्भ में कैसा पापी जीव आया है! मेरे पति को खा गया और सारा धन नष्ट हो गया दरिद्रता ने डेरा डाल लिया। मैं अब क्या करूँ, क्या न करूँ?

कुछ दिन पश्चात् पुत्र पैदा हुआ।
क्या करूँ, कैसे करूँ, इसका पेट कैसे भरूँ... दो जून रोटी भी नहीं है मेरे पास, कहाँ से इसे खिलाऊँ पिलाऊँ! बड़ा भाग्यहीन है यह! पुण्य इसके पास हैं ही नहीं! इसका नाम अकृतपुण्य ही ठीक रहेगा!
पुत्र बढ़ने लगा जैसे गरीबों के बढ़ते हैं, न खाने को उपयुक्त भोजन आदि, न पहनने को कपड़े, न कोई साथ, न साथी, न देख भाल करने वाला, बीमारी में दवा दारू भी नहीं! परन्तु किया क्या जाये! कर्म से बिना भोगे छुटकारा भी तो नहीं!
कहाँ जा रहे हैं आप लोग?
यहाँ पर एक कृतपुण्य नाम का गृहस्थ है, उसका खेत साफ करने के लिये जा रहे हैं वहीं मजदूरी मिलेगी।

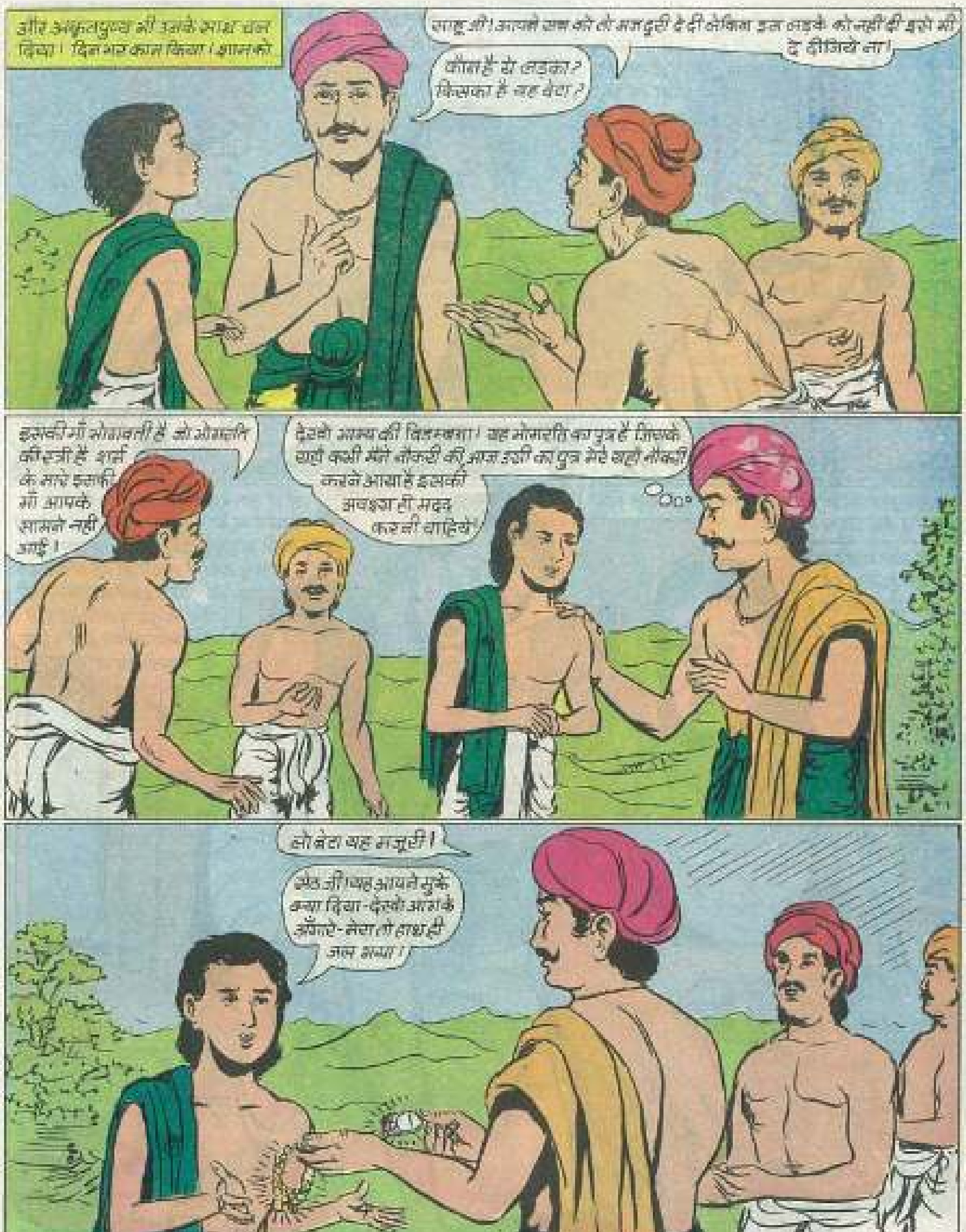
और अकृतपुण्य भी उनके साथ चल दिया। दिन भर काम किया। शाम को
साहू जी! आपने सब को तो मजदूरी दे दी लेकिन इस लड़के को नहीं दी इसे भी दे दीजिये ना!
कौन है ये लड़का? किसका है यह बेटा?
इसकी माँ सोमावती है जो सोमदत्त की स्त्री है शर्म के मारे इसकी माँ आपके सामने नहीं आई।
देखो भाग्य की विडम्बना। यह सोमदत्त का पुत्र है जिसके यहाँ कभी मैंने नौकरी की आज उसी का पुत्र मेरे यहाँ नौकरी करने आया है इसकी अवश्य ही मदद करनी चाहिये!
लो बेटा यह मजूरी!
सेठ जी! यह आपने मुझे क्या दिया - देखो आग के अँगारे - मेरा तो हाथ ही जल गया!

वास्तव में यह लड़का है ही अकृतपुण्य - दिये स्वर्ण आभूषण और बन गये आग के अँगारे। बिना उसके पुण्य के कोई किसी की सहायता भी तो नहीं कर सकता।
अच्छा बेटे! यह लो चने! और अपने घर जाओ!
अकृतपुण्य को औरों के मुकाबले तिगुने चने दिये परन्तु जब घर पर पहुँचा .....
कहाँ चला गया रे तू! मैं तुझे ढूंढते - ढूंढते थक गई! और यह तेरी झोली में क्या है?
माँ मैं एक गृहस्थ के यहाँ खेत-साफ करने गया था! उसका नाम था कृतपुण्य! उसने मजूरी में मुझे स्वर्ण आभूषण दिये परन्तु हाथ में रखते ही वह अँगारे बन गये! फिर उसने मेरी झोली में औरों के मुकाबले तिगुने चने दिये लेकिन बचे हैं केवल ये ही बहुत थोड़े से!

अरे बावले! यह तेरी झोली तो फटी है! इसमें चने टिकते कैसे? और फिर बिना पुण्य के कुछ मिलता भी तो नहीं है। जो लक्ष्मी को दान देता है उसे ही लक्ष्मी मिलती है। और हाय पुत्र! देख भाग्य की विडम्बना, जो तुम्हारे पिता के यहाँ नौकर था आज इसी के यहा नौकरी मुझे करनी पड़ी! हमें यदि गौरव से जीना है तो इस नगर से बाहर चले जाना चाहिये!
भोजवती अपने बच्चे अकुलकुमार को लिये पहुंच गई सीता भवन नाम के गांव में अशोक नामके एक गृहस्थ के पास
मैया! मैं दुखिया हूँ! रात्रि को पुत्र के साथ यहां विश्राम करने की आज्ञा दे दो तो आपका अहसान मानूंगी!
बहिन यह अपना ही घर समझो! मेरे सात पुत्र हैं जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है! तुम अपने बच्चे के साथ यहां आराम से रहो! और मेरे बच्चों की देखभाल करती रहो! तुम्हें व तुम्हारे बच्चे को यहां कोई कष्ट नहीं होगा!

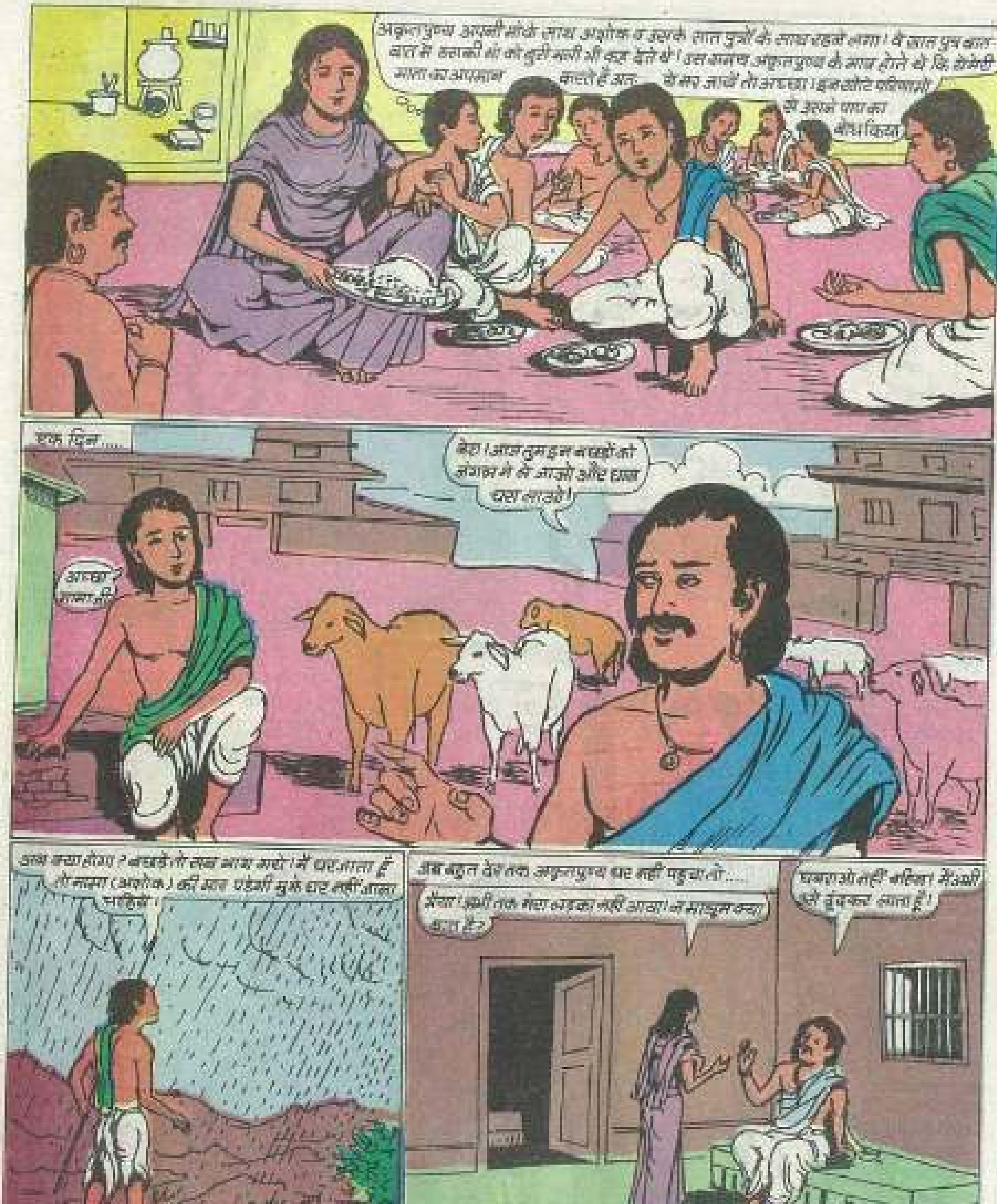
अकुलपुण्य अपनी माँ के साथ अशोक व उसके सात पुत्रों के साथ रहने लगा। वे सात पुत्र बात बात में उसकी माँ को बुरी भली भी कह देते थे। उस समय अकुलपुण्य के भाव होते थे कि, ऐसी माता का अपमान करते हैं अतः ये मर जायें तो अच्छा। इन खोटे परिणामों से उसने पाप का बंध किया
एक दिन.....
बेटा! आज तुम इन बछड़ों को जंगल में ले जाओ और घास चरा लाओ!
अच्छा मामा जी!
अब क्या होगा? बछड़े तो सब भाग गये! मैं घर जाता हूँ तो मामा (अशोक) की मार पड़ेगी मुझे घर नहीं जाना चाहिये।
जब बहुत देर तक अकुलपुण्य घर नहीं पहुँचा तो.....
भैया! अभी तक मेरा लड़का नहीं आया! न मालूम क्या बात है?
घबराओ नहीं बहिना! मैं अभी उसे ढूंढकर लाता हूँ!

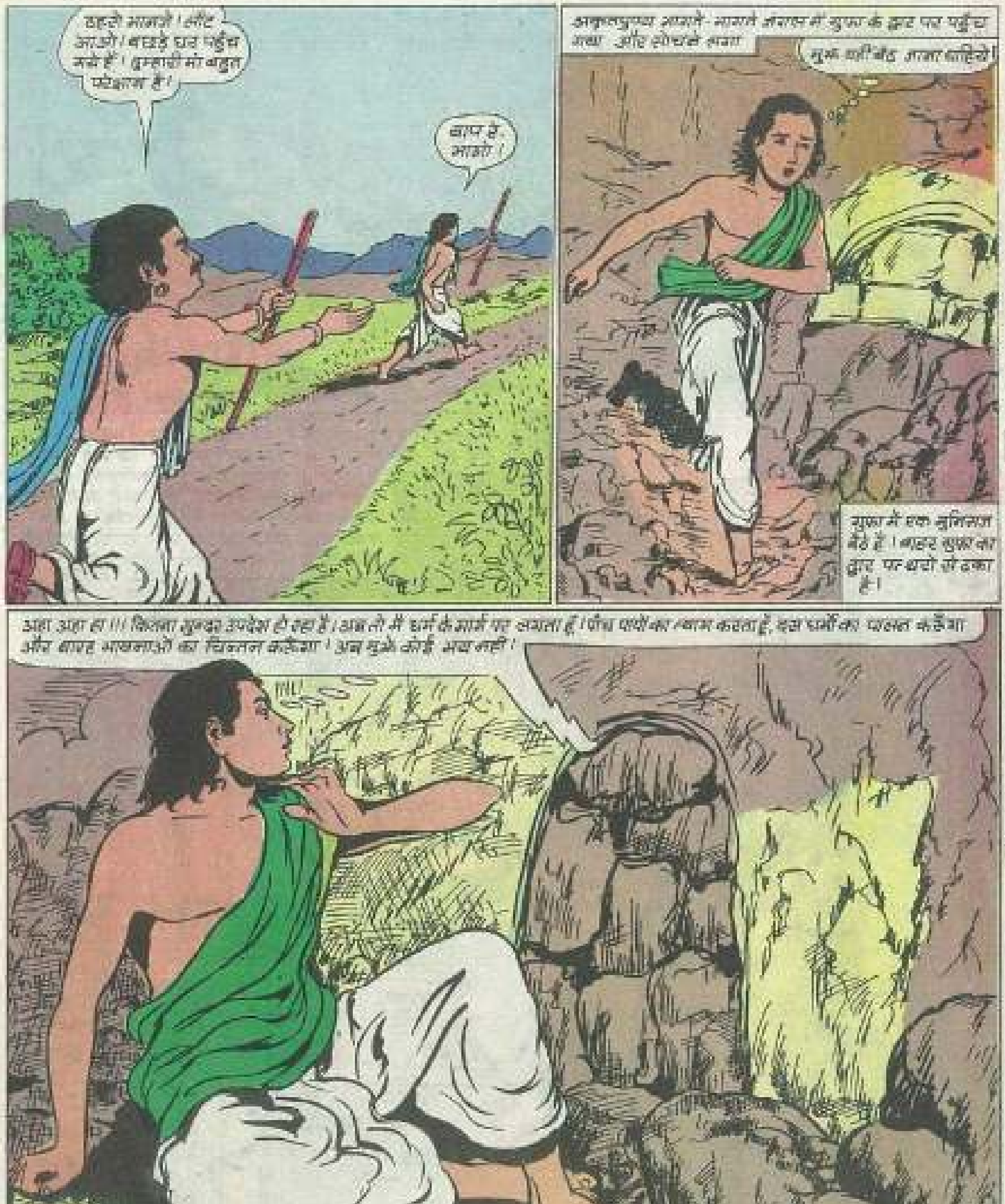
ठहरो भानजे! लौट आओ! बछड़े घर पहुँच गये हैं! तुम्हारी माँ बहुत परेशान है!
बाप रे भागो!
अकुलवश भागते-भागते जंगल में गुफा के द्वार पर पहुँच गया और सोचने लगा
मुझे यहीं बैठ जाना चाहिये!
गुफा में एक मुनिराज बैठे हैं! बाहर गुफा का द्वार पत्थरों से ढका है।
अहा अहा हा!!! कितना सुन्दर उपदेश हो रहा है। अब तो मैं धर्म के मार्ग पर लगता हूँ! पाँच पापों का त्याग करता हूँ, दस धर्मों का पालन करूँगा और बारह भावनाओं का चिन्तन करूँगा! अब मुझे कोई भय नहीं!

अचानक......
शुभ भावों से मरण करने के कारण अतुलपुण्य महान स्वर्ग में देव हुआ।
मैं कहाँ हूँ, यह प्रदेश कौनसा है? यह नौकर, चाकर, वैभव क्या है? यह सब मुझे कहाँ मिला? अहा! हा! हा! समझा - यह सब मुझे मुनि महाराज के उपदेश के कारण प्राप्त हुआ। महाराज के उपदेश से मेरा विश्वास ठीक बना, सात तत्वों का जैसा स्वरूप है वैसा मैंने श्रद्धान किया। अब सबसे पहले मुझे अपने उन परम उपकारी महाराज के दर्शन करने के लिये आना चाहिये।

उधर ...
भैया ! अब हमें अकृतपुण्य को ढूंढने के लिये चलना चाहिये !
अच्छा बहिन चलो चलें !
और पहुँच गये जंगल में...
हैं ! यह क्या ? हाय रे मेरे पुत्र ! तू मुझे अकेला छोड़कर कहाँ चला गया ! मैं बड़ी भाग्यहीन हूँ ! आ, तू मेरी गोद में बैठ और एक बार मुझे माँ कहकर पुकार
माँ मृतक के शरीर को छोड़, मुझे अपना पुत्र मान, मुझे प्यार कर !
माँ ! तू आश्चर्य मत कर ! मैं धर्म के प्रभाव से देव हुआ हूँ ! धर्म से क्या नहीं मिलता ! तू भी शोक को छोड़, मुनि महाराज का उपदेश सुन धर्म को धारण कर, तुझे भी सुख मिलेगा !

गुफा के द्वार से पत्थर हटाते हुए .....
हे मुनिराज ! मैं आपका दास हूँ क्योंकि आपके धर्मोपदेश से ही मुझे देव पर्याय मिली है अब हमें कल्याण का मार्ग बताइये !
हे भव्यो ! तुम धर्म को धारण करो ! जीव अजीव आदि सात तत्त्वों का जैसा स्वरूप है वैसा श्रद्धान करो, उनका ज्ञान करो, अपने चरित्र को निर्मल बनाओ तुम्हारा कल्याण होगा
महाराज ! मुझे कृपया गृहस्थ के योग्य व्रत दीजिये ताकि मैं भी धर्म मार्ग पर चल कर अपना कल्याण कर सकूं !
तुमसे महा विचार ! तुम्हारी होनहार उत्तम है ! तभी तो तुम्हारे ऐसे विचार हुए ! तुम विभवगुणे सम्पत्ति अपार का व्रत ग्रहण करो ! यह व्रत मनुष्यों के वैभव का मूल कारण है ! तथा दरिद्रता का नाश करने वाला है !

मुनिराजसे व्रत ग्रहण करके भोगवती अपने घर चली गई और विधिपूर्वक व्रत का पालन करने लगी। एक दिन .....
कितना सुख से मेरा जीवन व्यतीत हो रहा है। मेरी तो यह इच्छा है कि अगर धर्म का कुछ फल होता है तो इस व्रत के फलस्वरूप ये सभी पुत्र (अशोक के पुत्र) और देव (अकृत-पुण्य का जीव) अगले जन्म में मेरे पुत्र हों।

अशोक, उसके आठों पुत्र व भोगवती सब स्वर्ग में देव हुए... वहां से मरकर......

और इसके बाद...
उज्जयनी नगरी में सेठ श्रीदत्त और
उनकी पत्नी देवश्री बड़ी धार्मिक प्रकृति
वाले व भाग्यशाली थे। सात पुत्र के जन्म
के बाद जब सेठानी के गर्भ में आठवां
पुत्र आया तो.....
आज मैं कितनी प्रसन्न हूं। आज मेरी इच्छा हो रही है कि मैं जिनेन्द्रदेव की पूजा करूं, दान दूं, तथा बहरे व अन्धे लोगों पर दया करूं।
बच्चे का जन्म हुआ और...
पंडित जी! इस बच्चे का क्या नाम रखा जाए?
यजमान! जब से बच्चे ने इस घर में जन्म लिया है तभी से आपके यहां धन की वृद्धि हुई है। अतः यह धन्य है, भाग्यशाली है। इसका नाम धनकुमार ही उपयुक्त रहेगा।

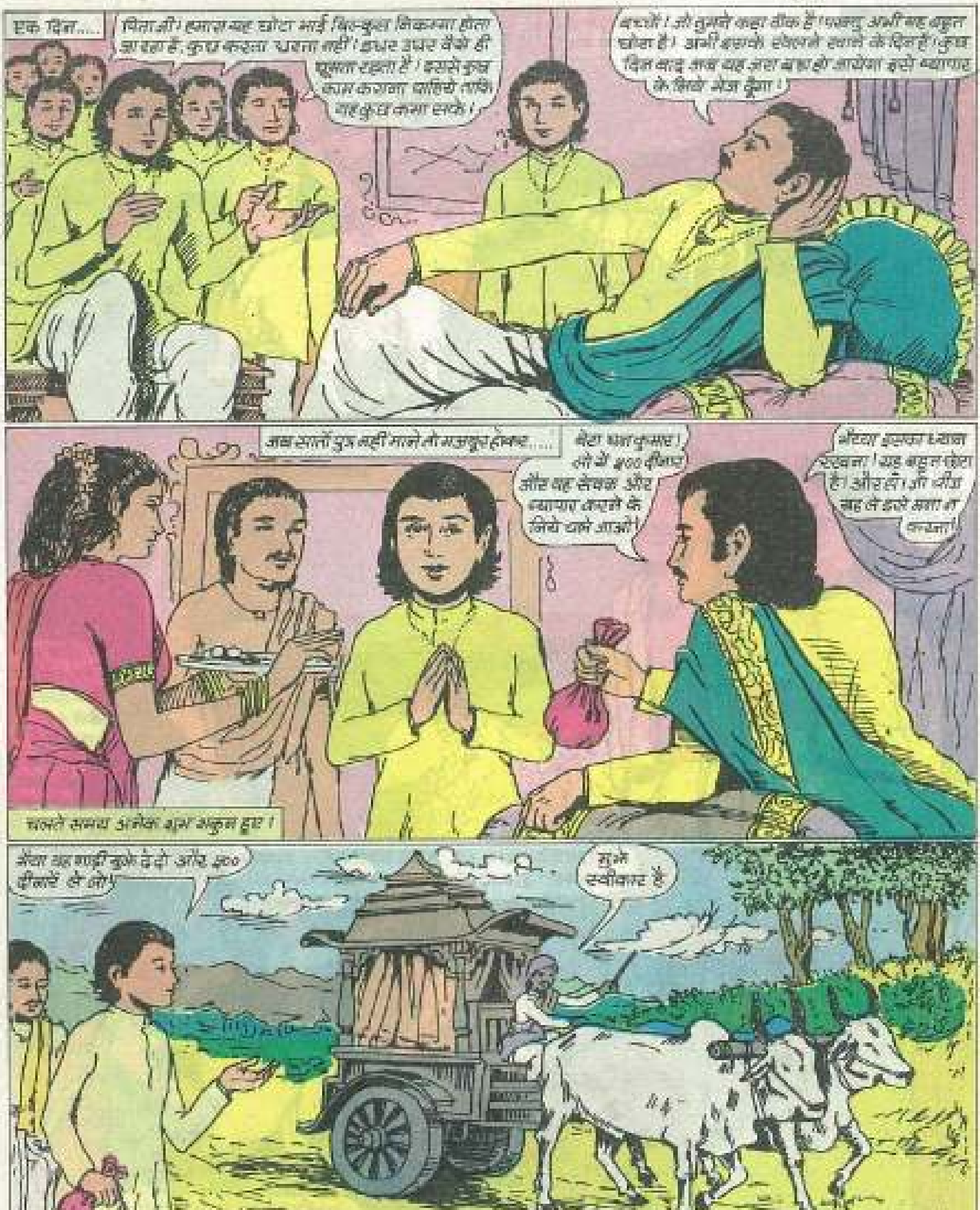

एक दिन....
पिता श्री ! हमारा यह छोटा भाई बिल्कुल निकम्मा होता जा रहा है, कुछ करता धरता नहीं ! इधर उधर वैसे ही घूमता रहता है ! इससे कुछ काम कराना चाहिये ताकि यह कुछ कमा सके !
बच्चों ! जो तुमने कहा ठीक है ! परन्तु अभी यह बहुत छोटा है ! अभी इसके खेलने खाने के दिन हैं ! कुछ दिन बाद, जब यह ज़रा बड़ा हो जायेगा इसे व्यापार के लिये भेज दूंगा !
जब सातों पुत्र नहीं माने तो मजबूर होकर.....
बेटा धन कुमार ! लो ये ५०० दीनार और यह सेवक और व्यापार करने के लिये चले जाओ !
भैय्या इसका ध्यान रखना ! यह बहुत छोटा है ! और हाँ ! जो चीज़ यह ले इसे लेने न देना !
चलते समय अनेक शुभ शकुन हुए !
भैया यह गाड़ी मुझे दे दो और ५०० दीनारें ले लो !
मुझे स्वीकार है

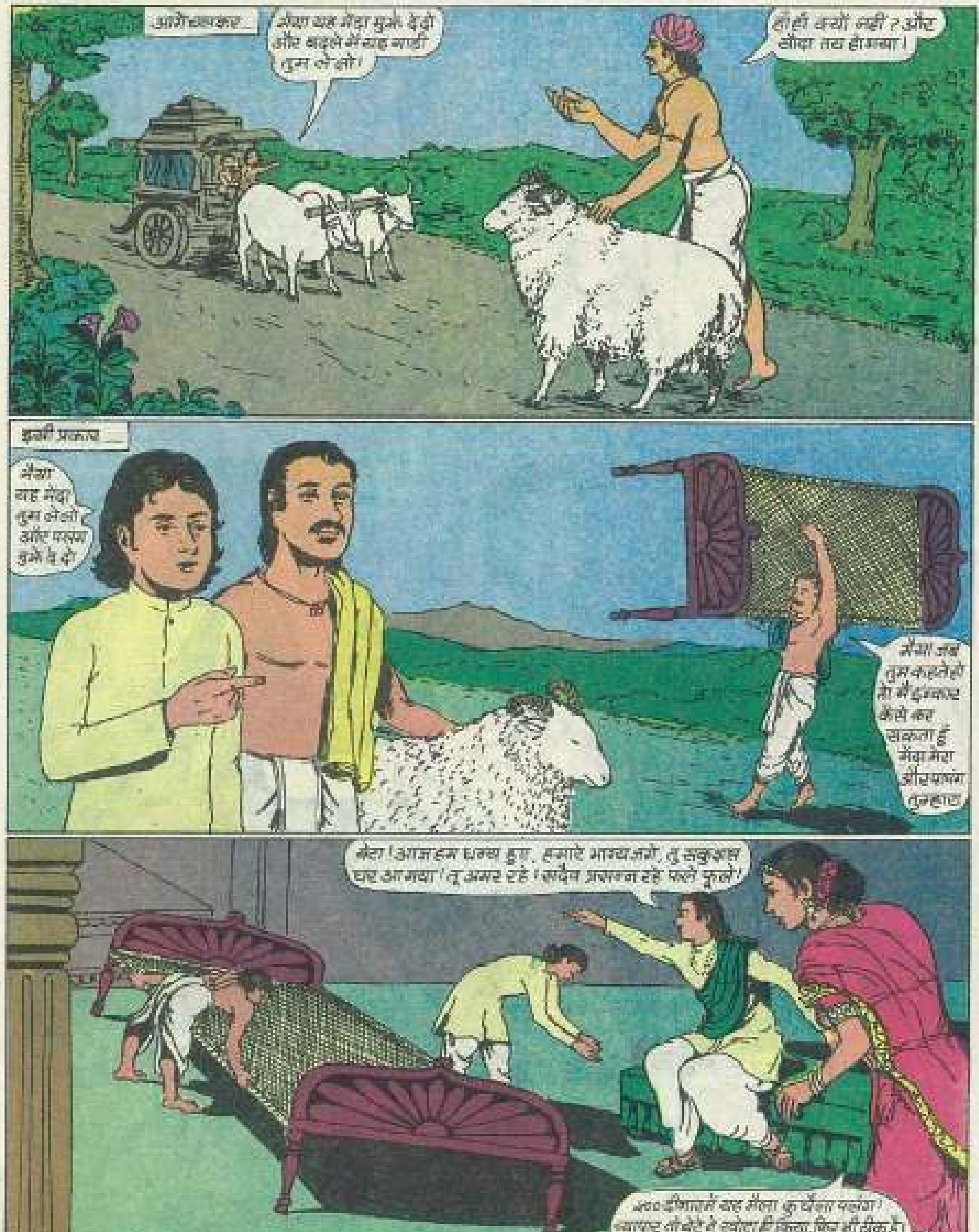

आगे चलकर...
भैया यह मेढ़ा मुझे दे दो और बदले में यह गाड़ी तुम ले लो।
हाँ हाँ क्यों नहीं? और सौदा तय हो गया।
इसी प्रकार...
भैया यह मेढ़ा तुम ले लो और पलंग मुझे दे दो
भैया जब तुम कहते हो तो मैं इनकार कैसे कर सकता हूँ मेढ़ा मेरा और पलंग तुम्हारा
बेटा! आज हम धन्य हुए, हमारे भाग्य जगे, तू सकुशल घर आ गया! तू अमर रहे! सदैव प्रसन्न रहे फले फूले!
४०० दीनारों में यह मैला कुचैला पलंग!
व्यापार तो बेटे ने खोटा ही किया, फिर भी ठीक है।

माता पलंग को धो रही है। धोते धोते एक पाये का लाख निकल गया और उसमें से ५ रत्न निकल पड़े। इसी प्रकार चारों पायों से रत्न निकल पड़े उन रत्नों को लेकर .....
!!!
...पिता अपने पुत्रों के पास गया और .....
देखो
बेटो! तुम्हारा छोटा भाई ५० दीनार के बदले कितने रत्न लाया है। पुण्य के उदय से हानि का व्यापार भी लाभ का व्यापार हो जाता है। पुण्य पाप से ही लाभ व हानि होते हैं। अतः पुण्योपार्जन में लगना चाहिये।
मुझे ये रत्न अपने पास नहीं रखने चाहियें। बल्कि राजा को सौंप देने चाहियें। क्यों कि यदि राजा को पता चल गया तो खैर नहीं। लोभ बिल्कुल नहीं करना चाहिये।
राजन्! ये रत्न एक पलंग में से निकले हैं जो कि मेरा छोटा पुत्र बाजार से खरीद कर लाया है।
सेठजी! तुम्हारा पुत्र बड़ा पुण्यवान है! पुण्य से ही उसे यह सम्पदा प्राप्त हुई है। मैं इस धन को नहीं लूंगा। आज से मैंने उसका नाम कृतपुण्य रख दिया। तो यह अपने रत्न और साथ में कुछ मेरी ओर से भी।

एक दिन....
पिता जी मेरी इच्छा है कि मैं यमगृह (कालगुफा) में प्रवेश करूं कृपया आज्ञा दीजियेगा।
मैं जानता हूँ कि तू पुण्यवान है। तेरा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता लेकिन लोग तो यही कहेंगे कि लोभी पिता ने धन प्राप्ति के लिये अपने पुत्र को यमगृह में भेज दिया। परन्तु बेटा तेरा आग्रह देखकर मना भी कैसे करूं।
और धर्मकुमार पहुंच गया यमगृह में
आओ यहां विराजो। हम यहां बहुत दिनों से यमराज कुबेर की आज्ञा से यहां बैठे हैं और आपके लिये ही कुछ निधियों की रक्षा कर रहे हैं। कृपया ये निधियां अब आप सम्भालिये ताकि हमें छुट्टी मिले।
धर्मकुमार चल पड़ा घर की ओर लोगों ने...
देखो कितना पुण्यशाली है यह बालक! संसार में जो सुख मिलता है सब पुण्य का दान है। न मालूम इसने क्या-क्या पुण्य कर्म किये होंगे जो यह यमगृह से सकुशल तो लौटा ही और साथ में अनेक निधियां भी मिलीं।

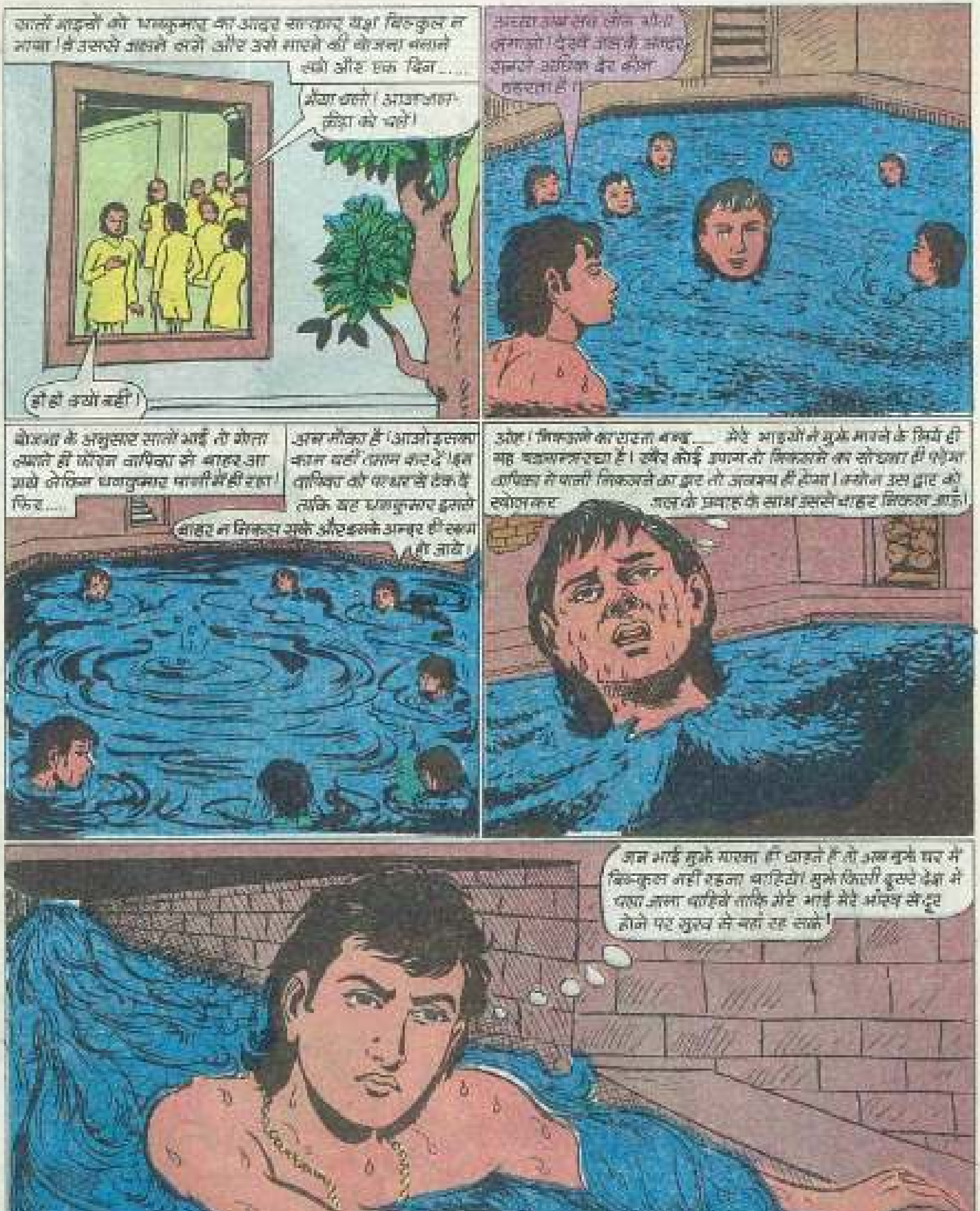
सातों भाइयों को धनकुमार का आदर सत्कार ज़रा भी बिल्कुल न भाया। वे उससे जलने लगे और उसे मारने की योजना बनाने लगे और एक दिन....
भैया चलो! आज जल-क्रीड़ा को चलें!
हाँ हाँ क्यों नहीं!
अच्छा अब सब लोग गोता लगाओ! देखें पानी के अन्दर सबसे अधिक देर कौन ठहरता है।
योजना के अनुसार सातों भाई तो गोता लगाते ही फौरन वापिका से बाहर आ गये लेकिन धनकुमार पानी में ही रहा। फिर....
अब मौका है। आओ इसका काम यहीं तमाम कर दें। इस वापिका को पत्थर से ढँक दें ताकि वह धनकुमार इससे बाहर न निकल सके और इसके अन्दर ही खत्म हो जाये।
ओह! निकलने का रास्ता बन्द.... मेरे भाइयों ने मुझे मारने के लिये ही यह षड्यन्त्र रचा है। और कोई उपाय तो निकलने का सोचना ही पड़ेगा। वापिका से पानी निकलने का द्वार तो अवश्य ही होगा। क्यों न उस द्वार को खोलकर जल के प्रवाह के साथ उससे बाहर निकल जाऊँ।
जब भाई मुझे मारना ही चाहते हैं तो अब मुझे घर में बिल्कुल नहीं रहना चाहिये। मुझे किसी दूसरे देश में चला जाना चाहिये ताकि मेरे भाई मेरे आँख से दूर होने पर सुख से यहाँ रह सकें।

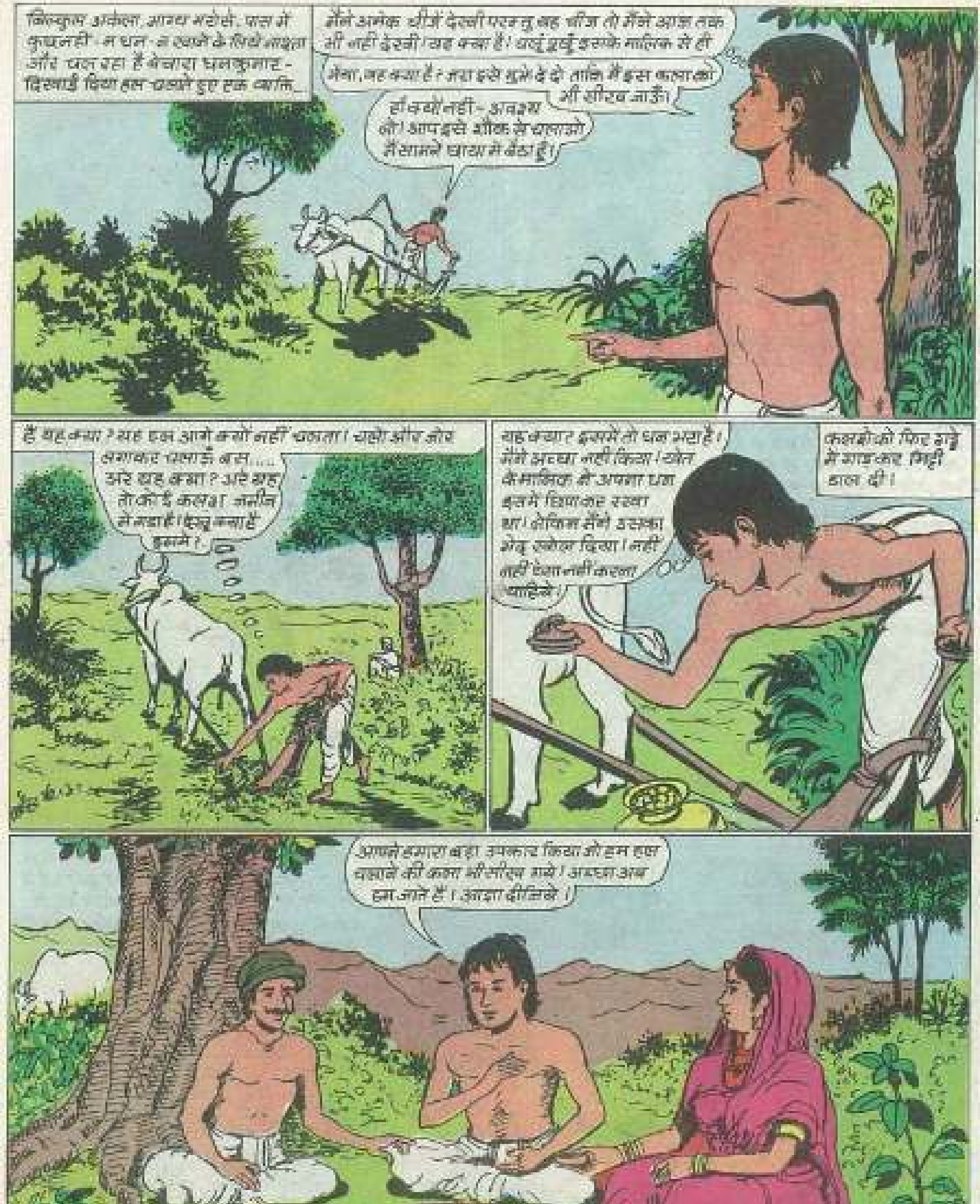
बिल्कुल अकेला, भाग्य भरोसे, पास में कुछ नहीं - न धन - न खाने के लिये भोजन और चल रहा है बेचारा धनकुमार - दिखाई दिया हल चलाते हुए एक व्यक्ति_
मैंने अनेक चीजें देखी परन्तु यह चीज तो मैंने आज तक भी नहीं देखी। यह क्या है! चलूं पूछूं इसके मालिक से ही
भैया, यह क्या है? जरा इसे मुझे दे दो ताकि मैं इस कला को भी सीख जाऊं।
हां क्यों नहीं - अवश्य लो! आप इसे शौक से चलाओ मैं सामने छाया में बैठा हूं।
हैं यह क्या? यह हल आगे क्यों नहीं चलता। चलो और जोर लगाकर चलाऊं बस.....
अरे यह क्या? अरे यह तो कोई कलश। जमीन में गड़ा है! देखूं क्या है इसमें?
यह क्या? इसमें तो धन भरा है। मैंने अच्छा नहीं किया। खेत के मालिक ने अपना धन इसमें छिपाकर रखा था। लेकिन मैंने उसका भेद खोल दिया। नहीं नहीं ऐसा नहीं करना चाहिये।
कलश को फिर गड्ढे में गाड़कर मिट्टी डाल दी।
आपने हमारा बड़ा उपकार किया जो हम हल चलाने की कला भी सीख गये। अच्छा अब हम जाते हैं। आज्ञा दीजिये।

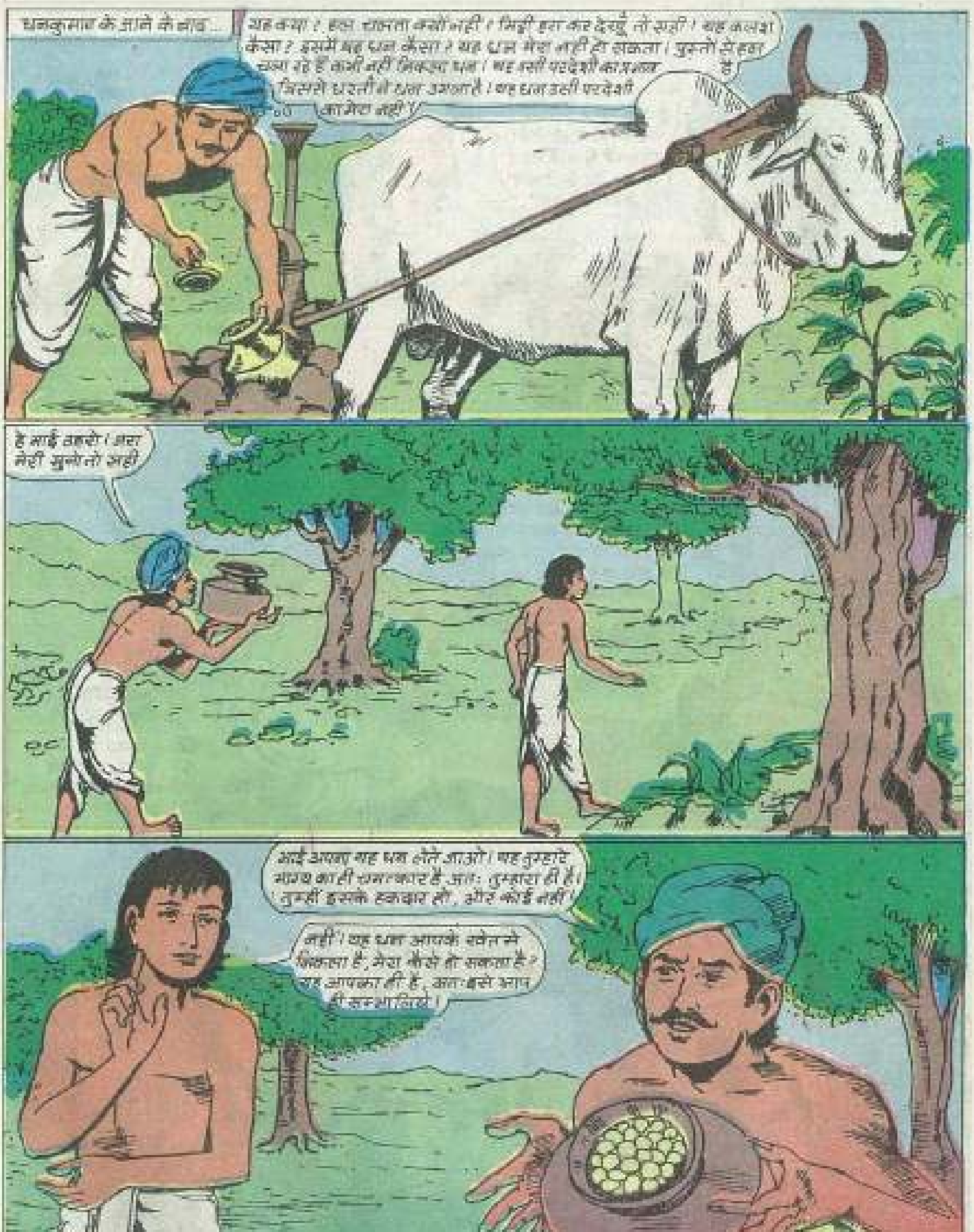

धनकुमार के जाने के बाद...
यह क्या ? हल चलता क्यों नहीं ! मिट्टी हटा कर देखूँ तो सही ! यह कलश कैसा ? इसमें यह धन कैसा ? यह धन मेरा नहीं हो सकता। पुरखों से हल चला रहे हैं कभी नहीं निकला धन ! यह उसी परदेसी का प्रताप है जिससे धरती से धन उगला है ! यह धन उसी परदेसी का मेरा नहीं !
हे भाई ठहरो ! जरा मेरी सुनो तो सही
भाई अपना यह धन लेते जाओ ! यह तुम्हारे भाग्य का ही चमत्कार है अतः तुम्हारा ही है। तुम्हीं इसके हकदार हो, और कोई नहीं !
नहीं ! यह धन आपके खेत से निकला है, मेरा कैसे हो सकता है ? यह आपका ही है, अतः इसे आप ही सम्भाल लिजे !

हमने तमाम उम्र गरीबी में ही बिताई। कभी इतना धन स्वप्न में भी नहीं देखा। हमारा होता तो पहले से क्यों न निकलता! क्यों हमारी गरीबी की मज़ाक उड़ाते हो ?
गरीबी की मज़ाक - बात धनकुमार को चुभी और.....
अच्छा भाई धन मेरा परन्तु मैं इसे तुमको देता हूँ अत: तुम्हें इसे स्वीकार कर ही लेना चाहिये! यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है तो यह भेंट स्वीकार करनी ही होगी
धन का कलश लेकर हलवाहक प्रसन्नचित परदेशी के विषय में सोचता हुआ वापिस लौट आया और धनकुमार आगे बढ़ता गया। चलते-चलते..
एक जगह....
प्रभो! मैं धन्य हुआ जो आपके दर्शन हुए! कृपया बतलाइये कि मैं इतना पुण्यशाली क्यों हूँ ?
बेटा! तुमने पूर्वजन्म में जैन धर्म में अनुराग के व्रत ग्रहण किये! उसी का यह फल है! यदि सुखी रहना चाहता है तो भविष्य में भी यही मार्ग अपनाना!
मुनिराज की आज्ञा शिरोधार्य करके धनकुमार आगे बढ़ चला और .....
आप कौन हैं, कहां से आये हैं ?
भैया! मैं परदेशी हूँ! थका हुआ था! नींद आ गई! क्षमा करें!

उद्यानपाल धनकुमार की नम्रता से प्रभावित होकर उसे अपने घर ले आया।
बेटी यह हमारा अतिथि है। मेरा भानजा है। बहुत दिन बाद तुम्हें देखने आया है। इसका खूब आदर सत्कार करना।
अच्छा पिताजी!
उद्यान पाल के पास रहते-रहते धन कुमार ने अपनी योग्यता दिखलाकर इलश्री, गुणवती आदि अनेक कन्याओं से विवाह किया और सुखपूर्वक रहने लगा। एक दिन राह में चलते-चलते .....
भैया तुम कौन हो? आप इतने बड़े आदमी मेरी हंसी क्यों कर रहे हो?
आपने मुझे पहिचाना नहीं! मैं आपका सबसे छोटा पुत्र धनकुमार ही तो हूँ!
तेरे जाने के बाद भाइयों ने हमारा सब धन छीन लिया और हमें कोठी से भगा! एक तो तेरे वियोग का दुख और दूसरा सम्पत्ति जाने के दुख से दुखित होकर तुझे ढूंढने के लिये घर से निकल पड़ा
ढूंढते-ढूंढते यहां राजगृही में आ पहुंचा हूँ। यहां पर मेरी बहिन भी रहती है।
धनकुमार अपने पिताजी को लेकर अपने घर आ गया।
पिताजी! मुझे अपनी माता जी व भाईयों की बहुत याद आ रही है। आपकी आज्ञा हो तो उन्हें यहां बुला
जैसी तुम्हारी इच्छा!

आप लोग अपने हृदय में किसी प्रकार का दुःख न मानें। आप मेरे पूज्य हैं। आपका किंचित भी दोष नहीं है। जब आप अशोक ब्राह्मण के पुत्र थे और मैं अपनी स्त्री के साथ आपके यहाँ रह रहा था तब मैंने आपसे द्वेष करके कर्म बंध किया था। उसी कर्म के फलस्वरूप मुझे दुःख उठाना पड़ा। जब पाप मैंने किया तो दुःख कौन भोगता! आप बिल्कुल दुःखी मत होइयेगा!
इसप्रकार सब साथ रह रहे थे।
उधर बुआ के घर में....
हैं! यह क्या? मेरे सिर पर यह सफेद बाल! देखो रूप और सौन्दर्य को नष्ट करने वाली वृद्धावस्था आ गई! यह सफेद बाल मृत्यु का संदेश ही तो है! बस अब मैं मुनि दीक्षा लेकर अपना कल्याण करूँ, इसी में भला है। और हाँ इस अवसर पर मैं अपने किसी आदमी को भेजकर अपने महान हितकारी धनकुमार को भी बुला लूँ। वह मेरा भाई तो है ही, बहनोई भी तो है!
हे धनकुमार जी, शालिभद्र जी ने कहा है कि शीघ्र मैं मुनि दीक्षा ले रहा हूँ, अतः आप मुझसे आकर मिलावें।
शालिभद्र को धन्य है जो उसने ऐसा विचारा। मैं भी इन भोगों से ऊब गया हूँ। मुझे भी वैसा ही करना चाहिये। बिना मुनि बने कल्याण नहीं।
अहा! हा! हा! आप और मुनि बनेंगे! जो अपना काम स्वयं नहीं कर सकता वह दीक्षा लेगा? असंभव है!

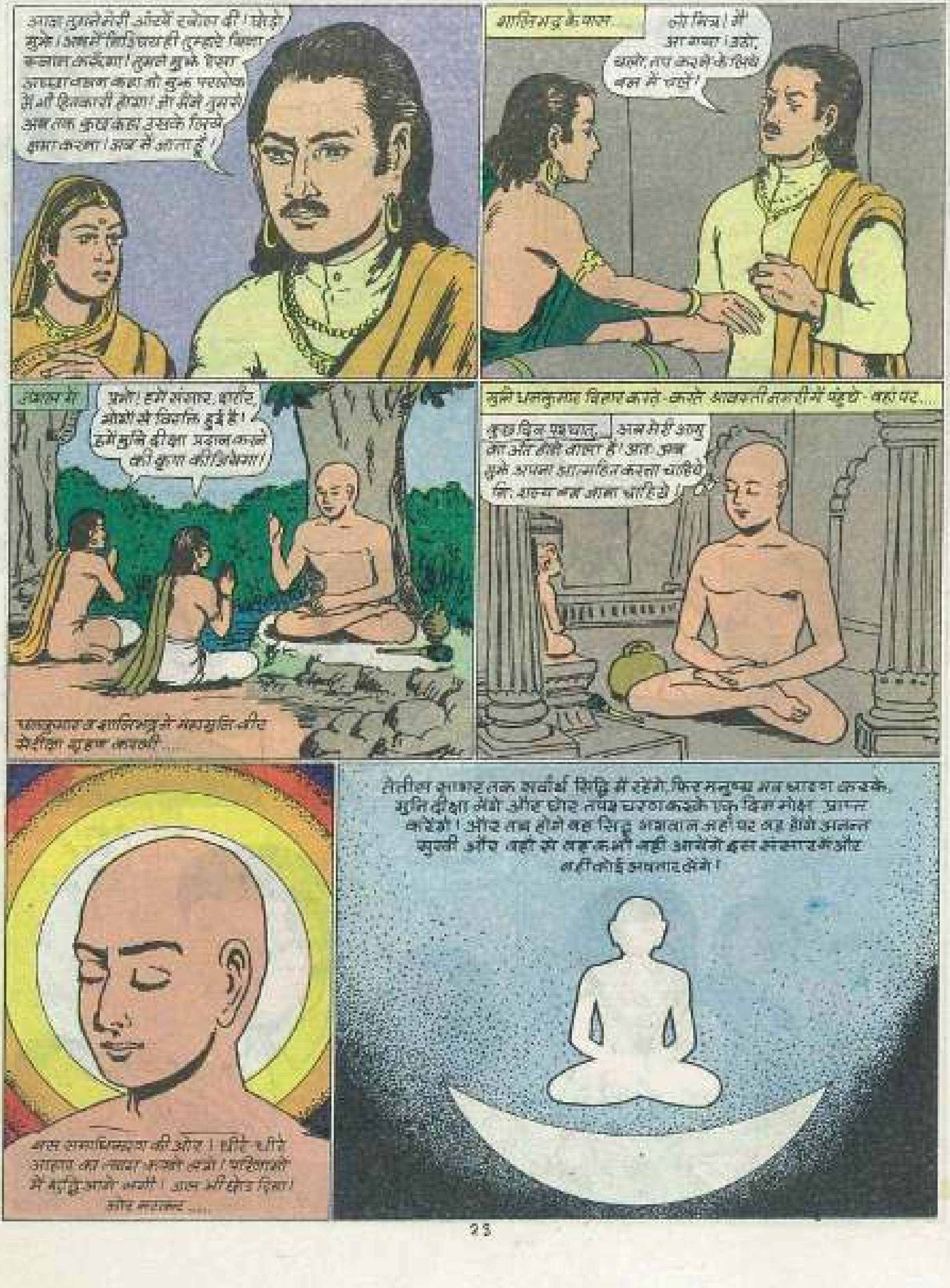
आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं! छोड़ो मुझे! अब मैं शीघ्र ही तुम्हारे बिना कल्याण करूँगा! तुमने मुझे ऐसा उपदेश वचन कहा जो मुझे परलोक में भी हितकारी होगा! और मैंने तुमसे अब तक कुछ कहा उसके लिये क्षमा करना! अब मैं जाता हूँ!
शालिभद्र के पास...
लो मित्र! मैं आ गया! उठो, चलो, तप करने के लिये वन में चलें!
जंगल में
प्रभो! हमें संसार, शरीर, भोगों से विरक्ति हुई है! हमें मुनि दीक्षा प्रदान करने की कृपा कीजियेगा!
धन्यकुमार व शालिभद्र ने महामुनि श्री से दीक्षा ग्रहण करली....
मुनि धन्यकुमार विहार करते-करते श्रावस्ती नगरी में पहुंचे - वहां पर....
कुछ दिन पश्चात्...
अब मेरी आयु का अंत होने वाला है! अतः अब मुझे अपना आत्महित करना चाहिये
अब समाधिमरण की ओर! धीरे-धीरे आहार का त्याग करने लगे! परिणामों में शुद्धि आने लगी! अन्त में देह छोड़ दिया! और मरकर ....
तैंतीस सागर तक सर्वार्थ सिद्धि में रहेंगे, फिर मनुष्य भव धारण करके, मुनि दीक्षा लेंगे और घोर तपश्चरण करके एक दिन मोक्ष प्राप्त करेंगे! और तब होंगे वह सिद्ध भगवान जहाँ पर वह होंगे अनन्त सुखी और वहीं से वह कभी नहीं आवेंगे इस संसार में और नहीं कोई अवतार लेंगे!

मन्जू और मुकेश
पापा जी! आप क्या पढ़ रहे हैं?
बेटा! मैं समयसार पढ़ रहा हूँ।
पापा जी! समयसार क्या होता है?
बेटा! समयसार द्रव्यानुयोग का ग्रन्थ है तुम नहीं समझोगे।
तो हमारी समझ में क्या आयेगा?
बेटा! पहले प्रथमानुयोग पढ़ो।
पापा जी! प्रथमानुयोग क्या है?
बेटा! जिसमें महापुरुषों के जीवन चरित्र का वर्णन है, वही प्रथमानुयोग है।
नमस्ते चाचा जी! देखो यह जैन कॉमिक्स हमारे पापा लाये हैं।
हाँ देखो! कितना सरल उपाय प्रथमानुयोग समझाने का।
अब तो पापा जी आप भी इसे मँगवाइये ना
हाँ बेटा! आज ही मनिऑर्डर किये देता हूँ।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त
लौकप्रिय प्रकाशन

जैन साहित्य प्रकाशन में एक नए युग का प्रारम्भ

आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थ माला से प्रकाशित
आधुनिक साहित्य

२. साधना और सिद्धि	१००/–
३. ज्ञान विज्ञान	२०/–
४. मंत्र महाविज्ञान	६०/–
५. ज्योतिष विज्ञान	६०/–
६. कर विज्ञान	३०/–
७. साधु परिचय	५०/–
८. वरांग चरित्र	५०/–
९. बोलती माटी	२५०/–
१०. आखन देखी आत्मा	६०/–
११. जैन रामायण सचित्र	२५/–
१२. भक्तामर सचित्र हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती	५००/–
१३. जैन चित्र कथाएं प्रति अंक	१५/–
१४. सुनो सुनाएं सत्य कथाएं प्रति अंक	२०/–
१५. आओ बच्चों गाये गीत, सचित्र	५०/–

प्राप्ति स्थान :-जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड, दिल्ली

फोन 05762-66074

सौ० प्रेमलता पहाड़िया धमपत्नि श्री शिखर चन्द पहाड़िया
जयहिन्द इस्टेअ नं० २-ए, दूसरी मंजिल, भूलेश्वर, बम्मई - २

PAHARIA

- ☞ PAHARIA SILK MILLS PVT. LTD.
- ☞ SHIKHARCHAND AMITKUMAR
- ☞ PAHARIA INDUSTRIES
- ☞ PAHARIA TEXTILES COROPORATION
- ☞ PARAS SLIK INDUSTRIES
- ☞ SAPNA SILK MILLS
- ☞ SHIKHARCHAND PREMLATA PAHARIA
- ☞ PAHARIA TEXTILES MILS PVT. LTD.
- ☞ PAHARIA TEXTILES INDUSTRIES
- ☞ PAHARIA UDYOG
- ☞ PAHARIA SYNTHETICS
- ☞ VARUN ENTERPRISES
- ☞ ANAND FABRICS
- ☞ PANCHULAL NIRMALDEVI PAHARIA

Kaushal Silk Mills Pvt. Ltd.

FACTORY :
875, KAROLI ROAD, OP. PAHARIA COMPOUND BHIWANDI, DIST. THANE
TEL : 34243, 22819, 22816 FAX : (02522) 31987

REGD. OFF.
JAI HIND ESTATE NO. 2-A, 2ND FLOOR, DR. A.M. ROAD, BHULESHWAR, BOMBAY- 400 002
TEL : 2089251, 2053085, 2050996 FAX : 2080231

Printed at : SAINANI OFFSET ☏ 2283885